

पद १३४

(राग: झिंजोटी - ताल: दादरा)

कौन नाम सुमरूं राम छांड के तुम्हारे ॥ध्रु.॥ सीतल भयो नहीं
बीख चंद्र माथे धारे । होय गयो सीतल गरल नाम के पुकारे ॥१॥
सेतु बांध बांध कपी व्याकुल भये सारे । पत्थर पर नाम लिख के
सागर पर तारे ॥२॥ नामका प्रताप सबहि पापताप हारे । मानिक
प्रभुजी को छांड जाऊं कौन द्वारे ॥३॥